भाकृअनुप–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय
बोरीआवी–387 310, आणंद, गुजरात

कार्यशाला प्रतिवेदन

संस्थान राजभाष कियान्वयन समिति के द्वारा दिनांक 16 मार्च, 2016 को "शोध कार्यों में हिन्दी का प्रयोग" विषय पर एक कार्याशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. इन्द्र मणि, अध्यक्ष, कृषि अभियांत्रिकी, भाकृअनुप–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. जितेन्द्र कुमार निदेशक, भाकृअनुप–औषधीय एवं सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय, बोरीआवी, आणंद ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस कार्यशाला में निदेशालय के सभी श्रेणी के कार्मिकों ने भाग लिया। अपने संबोधन में डॉ. इन्द्र मणि ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुये यह बताया की राजभाषा का प्रयोग का मुख्य उद्देश्य अपनी कृषि एवं शोध में प्रयोग करना है। उन्होंने यह भी बताया की राजभाषा के ही माध्यम से कृषि के क्षेत्र में हो रहे निरंतर शोधों को सुगमता से कृषकों के बीच प्रचार–प्रसार किया जा सकता है। डॉ. इन्द्र मणि ने इसपर भी जोर दिया की प्रचार–प्रसार का माध्यम बोझिल नही होना चाहिए। डॉ. जितेन्द्र कुमार ने अपने संबोधन में बताया की हिन्दी का प्रयोग करके शोध का आधुनिक ज्ञान एवं विज्ञान कृषकों तक पहुँचाया जा सकता है। साथ ही साथ राजभाषा में संवाद से ही कृषकों की वास्तविक आवश्यकता एवं जरूरतों को समझा जा सकता है।

कार्यशाला में चार सत्रों का आयोजन किया गया था। कार्यशाला के प्रथम सत्र में डॉ. इन्द्र मणि ने विस्तार से बताया कि राजभाषा का प्रयोग दूसरे भाषा की निरादर के सापेक्ष में नही देखा जाना चाहिए। उन्होंने यह भी बताया की विश्व के कई देश अपनी राजभाषा में विज्ञान की सभी विधाओं का प्रयोग करते हैं।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में डॉ. जगन्नाथ पंडित, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आर्ट्स कॉलेज, ऑकलाव, आणंद ने यह बताया की शोध कार्यों में राजभाषा का प्रयोग बहुत ही आवश्यक है क्योंकि जो भाषा विज्ञान एवं तकनीकी से नहीं जुडी वह धीरे–धीरे लूप्त होती जा रही है। उन्होंने शोध में वर्ण संकर शब्दों के प्रयोग पर भी बल दिया।

तृतीय सत्र में डॉ. कनक लता, परियोजना समन्वयक, भाकृअनुप–केवीके, वेजलपुर, गोधरा ने उदाहरण देकर यह जानकारी दी की किस प्रकार हिन्दी के कई शब्द यथावत अंग्रेजी शब्दकोशों में शामिल कर लिये गये। उन्होंने यह भी सुझााव दिया की परिभाषिक शब्दावली में यह ध्यान रखना चाहिए कि शब्द का मूल अर्थ ही परिलक्षित हो।

चतुर्थ सत्र में डॉ. शिव प्रसाद शुक्ल, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, नलिनी आर्ट्स कॉलेज, वल्लभ विद्यानगर, आणंद ने हिन्दी साहित्य का प्रादूर्भाव को विस्तार से बताया। उन्होंने यह भी बताया की यह भाषा लगभग 1347 वर्ष पुरानी है। डॉ. शुक्ल ने बताया की प्रायः कृषि अनुसंधान संबधित पत्र पत्रिकाओं में प्रयोग में लाये जाने वाले शब्द बोझिल होते हैं। अतः उन्होंने यह सुझााव दिया कि शोध पत्र/पत्रिका एवं आलेख लिखते समय यह ध्यान में रखा जाय की उपयोग किया हुआ शब्द किसानों के लिए समझने हेतु उपयुक्त है। डॉ. शुक्ल ने यह भी बताया कि हम निरंतर प्रयास से राजभाषा को शोध कार्य में पूरी तरह समायोजित कर सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में निदेशक डॉ. जितेन्द्र कुमार द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किया गया। कार्यशाला का विधिवत समापन से पहले डॉ. सत्यांशु कुमार, प्रधान वैज्ञानिक एवं हिन्दी अधिकारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सत्यांशु कुमार
हिन्दी अधिकारी

निदेशक महोदय कृपया अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है।